www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा संवर्धन
एक परम पुनीत पुण्य

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमाङ्क-२३६

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

१९८१

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरितमा संवर्धन : एक परम पुनीत पुण्य

पर्यावरण सन्तुलन में वृक्ष सम्पदा का सर्वाधिक महत्व है। पेड़-पौधे इस सन्तुलन को बनाये रखने में असामान्य भूमिका निभाते हैं। मौसम, वर्षा और यहां तक कि प्राणियों का अस्तित्व भी वृक्ष-वनस्पतियों पर अवलम्बित है। इनसे मिलने वाली प्राणवायु यदि थोड़े समय के लिए भी बन्द हो जाय तो जीवधारियों का जीवन संकट में पड़ जायेगा और कुछ ही क्षणों में दिखाई पड़ने वाले प्राणियों की हलचलें समाप्त हो जायेंगी। प्राणवायु के बाद जीवित रहने के लिए सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। पानी। इसका स्रोत भी वृक्ष वनस्पतियाँ हैं। बादलों के गर्भ से अपनी आकर्षण शक्ति द्वारा जल को खींचकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकटवर्ती क्षेत्र में उसे प्राणी समुदाय के लिए उपलब्ध कराने में वृक्षों की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है उसे सभी जानते हैं। मरुस्थलों के ऊपर बादल उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं किन्तु वृक्षों के अभाव में वहाँ पानी का दर्शन नहीं हो पाता तथा सदा जल संकट बना रहता है। जीवित रहने के लिए खाद्यानों का नम्बर तो प्राणवायु और जल के बाद आता है। खाद्यान्न के अभाव में तो कुछ दिनों तक जीवित भी रहा जा सकता है। किन्तु प्राणवायु के बिना तो कुछ मिनटों तक भी जीवित रह सकना असम्भव है। इन दो तत्वों प्राणवायु और जल को प्रचुर परिणाम में प्राप्त कर सकना वृक्ष सम्पदा द्वारा ही सम्भव है।

अपने जीवनकाल में वृक्ष जीवधारियों की अनेकों प्रकार से सेवायें करते हैं। सतत आक्सीजन के रूप में प्राण वायु निश्रत करना, बादलों से अभीष्ट मात्रा में जल उपलब्ध करना, एक प्रदूषक नियंत्रक—सेवक के रूप में वायु प्रदूशक अवयवों की सफाई करना, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाना, पुष्प और फल देना, जलाऊ तथा अनेकों कामों के लिए लकड़ी प्रदान करने जैसे अनेकों प्रकार के

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भौतिक अनुदानों से मनुष्य निरन्तर लाभ उठाता रहता है। उसके परोक्ष और प्रत्यक्ष अनुदानों का भौतिक मूल्यांकन करने पर हतप्रभ रह जाना पड़ता है। सामान्यता वृक्षों से प्राप्त होने वाली लकड़ी और फलों के रूप में वृक्षों की कीमत आंकी जाती है। किन्तु यह एक छोटा पक्ष है। वृक्षों के परोक्ष अनुदानों का मूल्योकन पैसों में किया जाय तो पता चलता है कि प्रत्यक्ष की तुलना में उसकी परोक्ष सेवा कई गुनी अधिक कीमती और महत्वपूर्ण है।

कलकत्ता यूनिवर्सिटी कालेज आफ एग्रीकल्चर के डा० टी० एम० दास वनस्पति शास्त्र के विशेषज्ञ हैं। उनके अनुसार एक वृक्ष अपने ५० वर्ष के जीवनकाल में जितनी सेवा करता है उसकी कीमत पैसे में जोड़ने पर पन्द्रह लाख रुपये से भी अधिक आती है। एक वृक्ष ५० वर्ष की अवधि में ढाई लाख रुपये का आक्सीजन देता है। भूमिकी उर्वरा शक्ति बढ़ाने में ढाई लाख रुपये के बराबर की खाद जितनी सहायता करता है प्रदूषण नियंत्रक के रूप में वायु प्रदूषक अवयवों की मुफ्त सफाई पाँच लाख रुपये के बराबर करता है। आद्रता रोकने, वर्षा करने तथा खाद्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रोटीनों की कीमत जोड़ने पर भी पचास वर्ष की अवधि में लगभग पाँच लाख रुपये की राशि आती है। १५ लाख रुपये के बराबर वृक्ष की परोक्ष सेवाओं का मूल्यांकन कर के सामान्यतया लकड़ी एवं फलों से से प्राप्त होने वाले कुछ सौ रुपये के रूप में उसकी कीमत आँकी जाती है।

यह तो एक वृक्ष की बात हुई। प्रकृति प्रदत्त वृक्ष सम्पदा से मिलने वाले कुल भौतिक अनुदानों के लेखा-जोखा लेने पर ज्ञात होता है कि जितनी सेवा ये वृक्ष मुफ्त करते हैं उतनी शायद मनुष्य भी न करता हो। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अपने देश में कुल भू-भाग के २३ प्रतिशत क्षेत्र में वन हैं। जबकि पर्यावरण सन्तुलन एवं देश के आर्थिक विकास के लिए कुल क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग वनों से आच्छादित रहना आवश्यक है। भारत के वन क्षेत्र २ लाख ७४ हजार वर्गमील में फैले हुए हैं। जो ३८ खरब ७८ अरब ११ करोड़ २९ लाख ६० हजार वर्ग फीट के लगभग आता है। वर्गफीटों में पेड़ों को गिनी जाय तो भारत के २३ प्रतिशत भू-भाग में फैले कुल वृक्षों की संख्या १९ अरब ३९ करोड़ ५ लाख

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

६४ हजार ८ सौ होती है। एक वृक्ष ५० वर्ष की अवधि में ढाई लाख रुपये का आक्सीजन, ढाई लाख का उर्वरक, पाँच लाख रुपये के बराबर प्रदूषण निवारण तथा पाँच लाख रुपये की वर्षा कराने जैसी उपलब्धियां प्रस्तुत करता है। देश के २३ प्रतिशत भू-भाग में फैले लगभग १९ अरब ३९ करोड़ ५ लाख ६४ हजार वृक्षों द्वारा ५० वर्षों में प्राप्त होने वाले लाभों का आर्थिक मूल्याँकन करने पर कुल आँकड़े इस प्रकार आते हैं। ४८ हजार ४ सौ ७६ खरब ४१ अरब २० करोड़ रुपये के बराबर आक्सीजन, ९६ हजार नौ सौ ५२ खरब ८२ अरब ४० करोड़ रुपये के बराबर वायु प्रदूषण निवारण, ४८ हजार ४ सौ ७६ खरब ४१ अरब २० करोड़ रुपये कीमत का उर्वरक और ९६ हजार ९ सौ ५२ खरब ८२ अरब ४० करोड़ कीमत की वर्षा आदि कुल धनराशि जोड़ने पर २ लाख ८० हजार ५८ खरब ४७ अरब २० करोड़ रुपये का लाभ ५० वर्षों की अवधि में प्राप्त होगा। भारत के कुल वन क्षेत्र से इस प्रकार प्रति वर्ष ५८ हजार ५८ अरब ४७ अरब २ करोड़ के बराबर बिभिन्न प्रकार के परोक्ष लाभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राण वायु उर्वरक, क्षमता, वातावरण शोधन तथा वर्षा के रूप में प्राप्त हो रहा है। जो भारत के छठी पंचवर्षीय योजना के कुल बजट से चार हजार गुना से भी अधिक है।

पर्यावरण सन्तुलन के लिए कुल भू-भाग के क्षेत्रफल का ३३ प्रतिशत वृक्ष वनस्पतियों से ढका होना चाहिए। कभी देश की ७० प्रतिशत भूमि वनों में आच्छादित थी। कटते-कटते वह मात्र २२ प्रतिशत अवशेष बची है। अनिवार्य पर्यावरण सन्तुलन सीमा से भी यह ११ प्रतिशत कम है। दूसरे प्रगतिशील देशों ने कड़ाई के साथ वन सम्पदा को नष्ट करने पर रोक लगा दी है। फिनलैंड में अब भी ६६ प्रतिशत भूमि में वन हैं जापान जैसे औद्योगिक राष्ट्र जहाँ कि ईंधन की अधिक आवश्यकता उद्योगों के लिए पड़ती है, में भी ६२ प्रतिशत क्षेत्रफल पेड़ पौधों से हरा-भरा है। रूस के कुल क्षेत्रफल के ३४ प्रतिशत तथा अमेरिका में २३ प्रतिशत भाग में वन हैं। सर्वाधिक अदूरदर्शिता का परिचय अपने देशवासियों ने दिया है। अन्धाधुंध वृक्षों की कटाई के कारण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस स्थिति को कड़ाई से रोकना होगा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तथा सन्तुलन के लिए वृक्षारोपण जैसे पुनीत भौतिक और आध्यात्मिक लाभ देने वाले कार्य को अवलम्ब आरम्भ करना होगा।

एक वृक्ष काटने से अधिक से अधिक एक हजार रुपये कीमत की जलाऊ तथा अन्य निर्माण योग्य लकड़ी प्राप्त होती है किन्तु उसके बने रहने से प्रतिवर्ष ३० हजार का स्वच्छ आक्सीजन, उर्वरक, पानी और वायु प्रदूषण निवारण का लाभ प्राप्त होता है। कटाई का अर्थ होगा लम्बे समय तक प्रतिवर्ष ३० हजार रुपये के लगभग का जो योगदान प्रकृति सन्तुलन के रूप में मिल सकता था, उससे वंचित रह जाना। अपने देश में एक लाख ३७ हजार वर्ग मील क्षेत्र में वृक्ष लगाने होंगे। इस क्षेत्र में लगभग ९ अरब ६९ करोड़ ५२ लाख ८२ हजार वृक्ष लगाने की आवश्यकता होगी। तब कहीं जाकर ३३ प्रतिशत वन सम्पदा, जो पर्यावरण सन्तुलन के लिए आवश्यक है का सन्तुलन बनेगा। भारत की कुल वर्तमान जन संख्या सड़सठ करोड़ पचास लाख है। एक व्यक्ति पीछे लगभग १२ वृक्ष आते हैं अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति १२ वृक्ष लगाये

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो ३३ प्रतिशत अनिवार्य वृक्ष सम्पदा का लक्ष्य पूरा हो सकेगा ।

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से वृक्षारोपण जैसा पुनीत कार्य दूसरा नहीं हो सकता। कभी इस देश में वृक्ष लगाने को एक अध्यात्मिक कृत्य मान जाता था। फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति के लिए इस प्रचलन का अनिवार्य रूप से पालन करता था। इसके पीछे यही तथ्य सन्निहित था कि पर्यावरण के सन्तुलित बने रहने पर ही मनुष्य की प्रगति एवं समुन्नति सम्भव है। वृक्षों की असामान्य भूमिका से तात्कालीन ऋषि परिचित थे। इसीलिए उन्होंने वृक्ष लगाने को अन्य धार्मिक कृत्यों जैसा ही पवित्र और उपयोगी कार्य माना था। कालान्तर में इस प्रचलन की अवहेलना हुई और तथाकथित प्रगतिशीलों ने धार्मिक अविश्वास कहकर उपेक्षा की फलस्वरूप वृक्ष कटते तो गये किन्तु नये वृक्ष लगाने की व्यवस्था न बन सकी। वृक्षों की उपयोगिता और महत्व पूर्ण भूमिका का रहस्योद्घाटन वैज्ञानिक विकास के साथ हुआ। विश्व के मूर्धन्य वनस्पतिशास्त्री पर्यावरण विशेषज्ञ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं कि वृक्ष सम्पदा पर समस्त मानव जाति का अस्तित्व टिका हुआ है। ये प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी हैं। जिनके न रहने से प्राणी समुदाय का जीवन संकट में पड़ जायेगा। प्रगतिशील देशों ने इस तथ्य को समझा है अपनी वन सम्पदा को बचाने एवं बढ़ाने के लिए हर तरह के कारगर उपाय सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर आरम्भ कर दिए हैं।

अपने यहाँ वृक्षारोपण को अभी उतना अधिक महत्व नहीं दिया जा सका है। सरकार इस दिशा में सचेष्ट है किन्तु कोई भी रचनात्मक कार्यक्रम जन-आन्दोलन के रूप में फैलने पर ही सफल हो पाते हैं। जब तक जनता वृक्षों की महत्ता को गम्भीरता से नहीं स्वीकारेगी तब तक सरकारी प्रयास भी उतने सफल नहीं हो सकेंगे। एक आँकड़े के अनुसार सन् १९७५ से १९७९ तक सरकार वनोद्योगों में २ अरब ५ करोड़ ७० हजार रुपये लगा चुकी है। मार्च १९७९ तक ३४ लाख हेक्टेयर अर्थात् ३ खरब ६५ अरब ७८ करोड़ ५६ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में वृक्ष लगाने का आरम्भिक कार्य पूरा किया। २०० वर्गफीट में एक वृक्ष

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानने पर कुल लगाये गये वृक्षों की संख्या एक अरब ८२ करोड़ ८९ लाख २८ हजार के लगभग आती है। सरकार अपने स्तर पर प्रयत्नशील है तथा प्रतिवर्ष एक बड़ी धन राशि इस कार्य में लगा रही है। किन्तु वृक्ष लगा देने मात्र से उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। समुचित देख-रेख के अभाव में इन वृक्षों में से तीन चौथाई तो मर जाते हैं। एक चौथाई ही पेड़ की स्थिति में पहुँचते हैं। देश की समाज की सेवा मानकर जनता इस कार्य को अपने हाथों में ले ले तो राष्ट्रीय सम्पत्ति भी बचेगी और वृक्षारोपण का अभीष्ट लक्ष्य भी पूरा हो सकेगा। बचत की धनराशि को सरकार दूसरे महत्व पूर्ण कार्यों में नियोजित कर सकती है।

एक व्यक्ति के जिम्मे १२ वृक्ष आते हैं। एक तरीका यह भी हो सकता है कि हर परिवार अपने पारिवारिक सदस्यों की संख्या के हिसाब से वृक्षारोपण का दायित्व उठावे। मात्र पौधा लगाने को ही इतिश्री न समझा जाय। इनमें पानी खाद देने तथा वृक्ष के रूप में विकसित होने तक समुचित देख-रेख की जाय। देख-रेख, सुरक्षा एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिपोषण की व्यवस्था न बन सकी तो श्रम का अधिकांश भाग सरकारी प्रयासों की भाँति निरर्थक चला जायेगा। और अन्ततः असफलता हाथ लगेगी। प्रत्येक परिवार अपने हिस्से का दायित्व संभाल ले, वृक्ष लगाने और उसे परिपक्व स्थिति तक पहुँचाने का क्रम चल पड़े तो कुछ ही वर्षों में अनिवार्य वृक्ष सम्पदा सीमा को ३३ प्रतिशत तक पहुँचाया जा सकता है। एक आम जैसे सामान्य वृक्ष को तैयार होने में लगभग १० वर्ष का समय लग जाता है। इसी वर्ष यह कार्य आरम्भ कर दिया जाय तो सन् १९९० तक अनिवार्य पर्यावरण सन्तुलन के लिए अनिवार्य वृक्ष सम्पदा का ३३ प्रतिशत लक्ष्य पूरा हो सकता है।

हरीतिमा का वृक्षों के अतिरिक्त जो एक अन्य सहज सुलभ स्वरूप है, वह है शाकवाटिका एवं जड़ी-बूटियों के उद्यान के रूप में। न्यूनतम उपलब्ध स्थान पर हरियाली का आनन्द व उनसे लाभ पाने के लिए इनसे बढ़कर कुछ नहीं। कुपोषण की समस्या को हल करने के लिए सब्जियां उगाना एवं उन्हें जन सुलभ बनाना एक ऐसा सृजनात्मक कार्यक्रम है जिसकी जितनी प्रशसा की जाये, कम ही कम

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है । भारत की अधिसंख्या जनता शाकाहारी है । ८० प्रति शत व्यक्ति देहात में रहते हैं जहां विटामिन व खनिक लवणों की पूर्ति के लिए हरी सब्जियां ही एक मात्र विकल्प हैं एवं बड़ी आसानी से उगाई जा सकती हैं । आँगनवाड़ी किचन गार्डन, छतवाड़ी एवं छप्परवाड़ी के रूप में चाहे गाँव हो अथवा शहर, चाहे फूस का झोंपड़ा या बहुमंजली इमारत—हरियाली से घर को समृद्ध किया जा सकना सम्भव है । बड़े-बड़े शहरों में जिनकी बगीचे में रुचि होती है, किसी भी तरह गमलों में, लकड़ी के बक्सों में वाँछित फूल-पौधे, जड़ी बूटियां व सब्जियों की बेलें लगा ही लेते हैं । दिल्ली, बम्बई आदि शहरों में कई ऐसे भवन व होटल हैं जहां छत पर पहुँचने से लगता है किसी बगीचे में खड़े हों । अमेरिका में तो मोटर-गाड़ियों से होने वाले प्रदूषण की रोकथाम हेतु हरी बेलों की बड़ी सौ-सौ मीटर ऊँची दीवालें जगह-जगह बनायी गयी हैं ताकि वे वातावरण को ओषजन युक्त बना सकें ।

संसार में जितनी भी वनस्पतियां हैं, वे सब औषधि स्वरूप हैं—ऐसा आयुर्वेद ग्रन्थों में लिखा है । इस रूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में छोटे-बड़े सभी पेड़ अपने किसी न किसी अंग से मानव जाति की सेवा करते हैं। बेल, आंवला, बहेड़ा के फल काम आते हैं तो प्रियंगु धाम के फूल। कितने ही वृक्षों की डालियाँ और छालें दवा का काम देती हैं। तुलसी की मंजरी से लेकर जड़ पत्ते, फल आदि औषधि के रूप में अमृतोपम माने गये हैं। नीम की पत्ती चर्म निरोधक शक्ति सर्वविदित है। इन्हें साक्षात् धन्वन्तरि का नाम दिया जाये तो अत्युक्ति न होगी। सर्पगन्धा के रूप में रक्तचाप तथा मनोयोग की, विन्क्रिस्टीन विनब्लास्टिन के रूप में रक्त कैंसर की एवं डायस्कोरिया (कार्टीसोन) के रूप में एलर्जी की खोज विगत दो दशकों में चिकित्सा जगत की एक महत्वपूर्ण क्रांति कही जा सकती है। रतनजोत, इल्लर-विल्लर आदि पौधों में कैंसर-रोधी सक्रियता की खोज जड़ी-बूटियों के सशक्त प्रभावों के मूल्याँकन का प्रथम चरण है। दवा पत्ते-पत्ते में छिपी है। जरुरत तो उनकी महत्ता पहचानने वालों व उन्हें खोज निकालने वालों की है

वृक्षों के विभिन्न अंगों यथा फल, फूल लकड़ी आदि की उपयोगिता, वनस्पतियों की पोषण एवं रोग निवारण

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हेतु आवश्यकता के अलावा इनका एक और पक्ष रह जाता जो अधिक सूक्ष्म, अदृश्य एवं अलौकिक है। दिव्य वनौषधियाँ यथा पीपल, तुलसी, ब्राह्मी जटामांसी, सोमवल्ली शंखपुष्पी, ब्रह्मदण्डी अपने सूक्ष्म आध्यात्मिक गुणों के कारण जानी जाती हैं। व्यक्ति की आस्था, कर्म-निष्ठा, मानसिक क्षमता एवं भाव-सवेदनाओं पर इनके प्रभावों का आर्षग्रन्थों में स्थान-स्थान पर उल्लेख है। इसी कारण हरीतिमाको अपना सघन सहयोगी मानकर ऋषिगण आश्रमों में रहते थे, प्राकृतिक सुषमा के मध्य स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते थे। पीली कनेर, सर्पगन्धा, गुगुल, हरिन्द्रा, दारु-हरिद्रा, विड़ङ्ग जैसी औषधियों से वैज्ञानिक को प्रभावशाली रोग-निवारक तत्व प्राप्त करने में सफलता मिली हैं। यहाँ तक कि धतूरे जैसे मादक विष समझे जाने वाले पौधे से भी ऐसे 'एलकेलाइड' निकाले गये हैं, जो प्राणदायक माने जाते हैं। भिलावा (सेमीकार्पस राना) गाँव देहातों में एक जानी मानी औषधि है। इससे नेशनल केमीकल लेबोरेट्री पुणे ने कैंसर निरोधक रसायन खोज निकाले हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार देखा जा सकता है। कि वृक्ष-वनस्पतियों की हर दृष्टि से इतनी अधिक उपयोगिता आवश्यकता है कि इन्हें जीवन निर्वाह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष कह सकते हैं। ये मिटेंगे तो मनुष्य का अस्तित्व ही न रहेगा।

यही कारण है कि अपने यहाँ पुरातन काल से ही वृक्षारोपण के प्रति जन श्रद्धा रही है। उसे पुनः जगाया जाना आवश्यक है। जो धनाभाव एवं बौद्धिक क्षमता के अभाव में यह रोना रोते रहते हैं कि समाज के लिए कुछ कर पाने में असमर्थ हैं उनके लिए सर्वश्रेष्ठ सेवा का मार्ग वृक्षारोपण का हो सकता है। एक वृक्ष लगाकर तैयार कर देने का अर्थ है देश के लिए ३० हजार रुपये प्रतिवर्ष तथा ५० बर्ष की अवधि में पन्द्रह लाख रुपये तथा सौ वर्षों में ३० लाख रुपये कीमत की पर्यावरण अनुकूलन के लिए आवश्यक सामिग्री जुटा देना। यह सेवा हर कोई कर सकता है जिसके लिए न तो विशेष धन ही आवश्यक है न ही विशिष्ट योग्यता की। धनी, गरीब, बुद्धिमान, अल्प-बुद्धि, साक्षर, निरक्षर सभी इस कार्य को सरलता से सम्पन्न कर सकते हैं। आवश्यकता इतनी भर है कि

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसका महत्व समझा और समझाया जाय और जन-जन में वृक्षारोपण के प्रति उत्साह पैदा किया जाय। एक व्यक्ति का अपने हिस्से का १२ वृक्ष तैयार कर देने का अर्थ होगा एक करोड़ ८० लाख रुपये की ऐसी प्रकृति सम्पदा जुटा देना जिससे समाज को ५० वर्षों तक निरन्तर प्राणवायु, वर्षा, वातावरण परिशोधन, भूमिकी उर्वरक क्षमता में वृद्धि जैसे अनेकों अनुदानों से लाभान्वित हो सकता है। इतनी बड़ी धनराशि के बराबर प्राणी समुदाय की सेवा कर सकना थोड़े प्रयत्नों द्वारा हर किसी के लिए सम्भव है। इन प्रयासों द्वारा ही पर्यावरण सन्तुलन बनेगा। देश की प्रगति और समृद्धि भी इस सन्तुलन पर अवलम्बित है। स्वार्थ और परमार्थ का भौतिक और आध्यात्मिक लाभों का दुहरा प्रयोजन पूरा करने वाले वृक्षारोपण जैसे पुनीत कार्य की दिशा में अविलम्ब कदम उठाया चाहिए।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्षारोपण एक ऐसा पावन कृत्य है, जिसमें आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति की दोनों ही सम्भावनाएँ सन्निहित हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना
गायत्रीतपोभूमि -मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Printed by Laxmi Printing Press, Mathura